International Journal of Research in Engineering and Science (IJRES)
ISSN (Online): 2320-9364, ISSN (Print): 2320-9356
www.ijres.org Volume 10 Issue 5 ǁ 2022 ǁ PP. 79-82

इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासः एक समीक्षा

किरण कलिता
शोधार्थी,हिन्दी विभाग,
असम विश्वविद्यालय
सिलचर,असम।
पिन नम्बरः 788011

Date of Submission: 02-05-2022 Date of acceptance: 15-05-2022

मामनी रायसम गोस्वामी,(14नवम्बर 1942–नवम्बर 2011) जो साहित्य की दुनिया में इंदिरा गोस्वामी और असमीया समाज में बाइदेउ यानी बड़ी दीदी कही जाती है, हिंदी पाठको के लिए एक परिचित नाम है। हिंदी के पाठको ने उनके उपन्यास 'छिन्नमस्ता' और 'अहिरन' के साथ ही साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित कृति 'जंग लगी तलवार' को विशेष महत्व दिया गया है। इंदिरा गोस्वामी की सुप्रसिद्धता के लिए कई सारे लोगों की प्रेरणा है। उनमें से प्रमुख है भारत रत्न डॉ भूपेन हाजरिका। उनके गीतों में मानवता की बात कही गई है। जब–जब उन्होंने गीतों में मानवता की बात उठाई है तब–तब उन्होंने समाज के निचले वर्ग की संघर्षो की,मजदूरों के दयनीय स्थिति की सुधार की बात कही है। इसी सुधारवादी दृष्टिकोण से प्रभावित होकर इंदिरा गोस्वामी ने अपने साहित्य में बहुत कुछ भूपेन हाजरिका से लिया है। भूपेन हाजरिका को समर्पित एक कविता में इंदिरा गोस्वामी ने कही है कि 'तुमार कण्ठ बाद दि मइ मोर जन्मभूमिर नक्शा आकिब नोवारु' यानी आपके कण्ठ यानी गीतो के बिना मैं अपनी जन्मभूमि की नक्शा अंकित नहीं कर सकती। उन्होंने अपने लोगों के अनकहे कष्टों और दुखों को अपने साहित्य के जरिए वाणी दी है। उनकी कृतियाँ कथावस्तु की विविधता और विशिष्ट अभिव्यक्ति कौशल के लिए जानी जाती है। उन्होंने स्कूली जीवन से ही कहानी लेखन शुरू कर दिया था। उनके शुरुआती कहानी संग्रह है 'चिनाकी मरिम' और 'कइना'। बाद में 'हृदय एक नदीर नाम' 'निर्वाचित गल्प' और 'प्रिय गल्प' शीर्षकों से उनके कहानी संग्रह भी प्रकाशित तथा प्रशंसित हुए। उनकी कहानियों में यथार्थ,सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि और गहरी संवेदना का संगम है।

इंदिरा गोस्वामी आधुनिक, मननशील, यथार्थवादी उपन्यास रचना में अद्वितीय उपन्यासकार है। वह अपने आसपास के समाज में दृष्टिगत होने वाली विभिन्न समस्याओं को बिल्कुल उसी रूप में अपने उपन्यासों में उतार देती है। विषय–वस्तु की विचित्रता और व्यापकता उनके उपन्यासों की अन्यतम विशेषता है। उपन्यासों के पृष्ठभूमि भी असम की सीमा अतिक्रमण करके राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँची है।

समकालीन असमीया उपन्यासकारों के विपरीत इंदिरा गोस्वामी ने अपने उपन्यासों में लेखन की नई शैली, नई विषय वस्तु, नई रवैया और मूल्यबोध को स्थान दिया है। हेनरी जेम्स ने कहा था कि -

The novel is not a very rigid nor a very standized form of writing- It can be of almost any length-It can employ an infinite variety of techniques] it can consist of different types of writings] it can change view points in the middle] it can concern with anything.

इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों को विचार विश्लेषण करके देखने से इस कथन की सत्यता प्रमाणित होती है।

विषय–वस्तु की विविधता:

इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में विषय–वस्तु की विविधता सुंदर तरीके से प्रतिफलित हुई है। उनके उपन्यास 'चेनाबर स्रोत', 'अहिरन' और 'जंग लगी तलवार' में श्रमिक जीवन के दुखरू–दुर्दशा, शोषण–उत्पीड़न की छवि देखने को मिला है। श्रमिक जीवन पर लिखे इन तीनों उपन्यासों में उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग को पहुचाये गये क्षति, मध्य भोगी द्वारा अपने हक के लिए किए आंदोलन असफल होना, श्रमिक वर्ग कुछ हद तक उत्तेजित होकर फिर मालिक वर्ग के भुलावे में आकर शांत हो जाना, निम्न स्तर की जीवन यापन आदि स्पष्ट रूप में चित्रित हुई है। "अहिरण" उपन्यास में नारी जीवन की करुण गाथा प्रतिफलित होने के बावजूद नारी के चंचल रूप और पुरुष के व्यभिचार वाले रूप का स्पष्ट झलक मिलता है। ठीक उसी प्रकार 'भिक्षार पात्र भांगि' उपन्यास में जमींदार वर्ग के व्यभिचार और शोषण–उत्पीड़न की एक जीवंत छवि अंकन करने में उपन्यासकार इंदिरा गोस्वामी सफल हुई है।

'दक्षिणी कामरूप की गाथा' और 'नीलकंठी ब्रज' दोनों उपन्यास में वर्णित है परंपरागत उच्च हिंदू समाज में विधवा नारी की यंत्रणादायक जीवन गाथा। एक ओर समाज द्वारा आरोपित नियम–कानूनों के पहाड़ सदृश्य दीवार और दूसरी ओर विधवाओं की यत्रंणा पूर्वक जीवन निर्वाह। दोनों ही उपन्यास के मूल नारी पात्र क्रम में 'गिरिबाला' और 'सौदामिनी' को रूढ़िवादी समाज व्यवस्था से जूझती हुई तथा नियमों का पालन करते–करते एक समय नियमों का

अतिक्रमण करके घोर अंतर्द्वंद वाले अवस्था में आकर अपने जीवन को त्याग देने की अंतिम तथा कठोर निर्णय लेते देखा गया है।

'उदयभानुर चरित्र' उपन्यास में एक अंतर्मुखी कलाकार के करुण दशा को चित्रित की गयी है। परिवार द्वारा असहयोगिता, नारी के स्वार्थपरता, कु–संगति, अत्यधिक नशा आदि सबसे जूझकर कलाकार उदयभानु कैसे हत्याकारी बन जाता है यह सभी कथा इस उपन्यास में वर्णित है। 'उदयभानु' और 'हरेण' दोनों चरित्र के बीच समलैंगिक संबंध स्थापन का प्रसंग भी इसमें चित्रित की गयी है।

'तेज आरु धूलिरे धूसरित पृष्ठा' यानी 'अ–इतिहास' उपन्यास में हत्या और ध्वंसलीला के बीच प्रेम मानवता की सुंदर छवि को दिखाया गया है। एक ही समाज के बीच उद्‌भव हुए हिंसात्मक परिस्थिति में भी हिंदू–सिख के बीच बरकरार रहने वाली प्रेम कहानी का बयान इस उपन्यास में है।

'देवपीठर तेज' और 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में धार्मिक तनावपूर्ण वातावरण में विभिन्न मत व्यक्त किए गए हैं। 'देवपीठर तेज' उपन्यास में साधारण सी बात पर पुरुष द्वारा नारी पर किये जाने वाले अत्याचार तथा निंदा के विपरीत उस पुरुष के पुरुषत्व पर हंसने जैसा दुस्साहस करने वाली एक नारी की कहानी व्यक्त है। ठीक उसी प्रकार 'छिन्नमस्ता' उपन्यास भी एक नारी द्वारा प्रचलित व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष तथा विरोध की कहानी है। जिसमें वह अपनी प्रतिवादी स्वर को बुलंदियों तक पहुचाने के लिए किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार है। चाहे उसके लिए उनकी जान ही क्यों न चली जाय,पर वह उस व्यवस्था के खिलाफ लड़ती रही। यहां उपन्यासकार इंदिरा गोस्वामी ने किसी भी धर्म व्यवस्था पर चोट न करते हुए पशु बलि के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की है।

'जखमी यात्री', 'बुद्धसागर धूसर गाइसा आरु मोहम्मद मूसा' और 'दशरथीर खोज' यात्रा–वृतांत विषयक उपन्यास हैं। तीनों उपन्यासों में वर्णित जगहों के सूचना आधारित प्रस्तुतीकरण के साथ–साथ भिन्न समाज के भिन्न स्तर के लोगों के सुख–दुख, हंसने–रोने, आशा–आकांक्षा आदि के सम्यक चित्र देखने को मिला है। तीनों उपन्यासों में भले ही कहानी की निरंतरता बिखरते नजर आते है फिर भी कहानी की एकसूत्रता बरकरार है। "दशरथीर खोज" में धार्मिक दृष्टिकोण से रामकथा पर प्रकाश दिया गया है।

'थेंफ़खी तहचिलदारर तामर तरोवाल' उपन्यास में इतिहास के पन्नों से मिटा दिए गए निचली असम के एक वीरांगना की जीवन गाथा चित्रित है।

उपन्यासों का वर्गीकरण:

विषय–वस्तु, शिल्प–कला–कौशल आदि भिन्न दिशाओं को मद्देनजर रखते हुए उपन्यासों का वर्गीकरण किया जाता है। समय परिवर्तन के चलते मानव के जीवन यात्रा में सोच–विचार, रवैया आदि में भी बदलाव आया है। साथ ही एक ही उपन्यास को भिन्न दृष्टिकोण से देखने पर उसे भिन्न श्रेणी में रखा जा सकता है। इंदिरा गोस्वामी के उपन्यास भी इससे अलग नहीं है। मुख्य रूप से इनके हर एक उपन्यास को सामाजिक उपन्यास के श्रेणी में रखा जा सकता है। इनके उपन्यासों में विभिन्न समाज की छवि, समस्या, समाधान आदि का प्रतिफलन हुआ है।

इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों की विषय–वस्तु के आधार पर उनके उपन्यासों को निम्नलिखित प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

(क) श्रमिक जीवनपरक उपन्यास: 'चेनाबर स्रोत', 'अहिरन' और 'जंग लगी तलवार' तीनों उपन्यासों में श्रमिक जीवन गाथा प्रतिफलित होने के नाते तीनों उपन्यासों को **'**श्रमिक जीवनपरक उपन्यास**'** के तौर पर चिह्नित किया गया है। इनमें से 'जंग लगी तलवार' उपन्यास को आंदोलन आधारित उपन्यास भी कहा जा सकता है।

(ख) भ्रमण केंद्रिक उपन्यास: अपने भ्रमण केन्द्रिक अनुभव के आधार पर ही इंदिरा गोस्वामी ने अपने ज्यादातर उपन्यासों का सृजन किया है। पर उपन्यास के चरित्रों के द्वारा किसी विशेष स्थान पर यात्रा करते समय अनुभूत विचित्र अनुभव, विभिन्न चरित्रों के विकाश आदि दिखाने वाले कुछ उपन्यासों का भी सृजन उन्होंने किया है। उनमें से है– 'जखमी यात्री', 'बुद्धसागर धूसर गाइसा आरु मोहम्मद मूसा' और 'दशरथीर खोज'। इन तीनों उपन्यासों को डायरी विधा में लिखे गये उपन्यास भी कहा जा सकता है, क्योंकि डायरी लेखन की तरह ही इनमें सन् ,तारीख आदि के बारे में मुख्य चरित्र द्वारा विवरण दिए जाते हैं।

(ग) राजनीतिक उपन्यास: राजनीतिक हत्याकांड और सांप्रदायिक संघर्ष को विषय वस्तु के रूप में लेकर रचित 'तेज आरु धूलिरे धूसरित पृष्ठा' यानी 'अ–इतिहास' उपन्यास को राजनीतिक उपन्यास के कोटी में रखा जा सकता है।

(घ) शोध या आलोचनात्मक उपन्यास: 'दशरथीर खोज', 'छिन्नमस्ता', 'थेंफ़खी तहचिलदारर तामर तरोवाल' आदि इस श्रेणी के उपन्यास है।

(ङ) आंचलिक उपन्यास: दक्षिण कामरूप की अमरंगा सत्र को लेकर लिखी उपन्यास 'दक्षिणी कामरूप की गाथा', कामरूप की धलेश्वरी नदी के तट पर बसे एक गांव की छवि को लेकर रचित उपन्यास 'भिक्षार पात्र भांगि' और वृंदावन के जीवन पर आधारित उपन्यास 'नीलकंठी ब्रज' को आंचलिक उपन्यास के कोटी में रखे जा सकते हैं। 'असमीया उपन्यासर गतिधारा' ग्रंथ में लेखक सत्येंद्र नाथ शर्मा ने 'नीलकंठी ब्रज' को एक परिवेश प्रधान उपन्यास भी कहा है।

(च) धार्मिक समाज केन्द्रिक उपन्यास: 'दक्षिणी कामरूप की गाथा', 'नीलकंठी ब्रज', 'देवपीठर तेज', 'छिन्नमस्ता', 'दशरथीर खोज' आदि उपन्यासों को धार्मिक समाज केन्द्रिक उपन्यास कह सकते हैं।

(छ) जीवनी परक उपन्यास: **'**थेंफ़खी**'** नाम की एक असमीया वीरांगना के जीवन के एक विशेष कालखंड पर लिखित उपन्यास 'थेंफ़खी तहचिलदारर तामर तरोवाल' इस श्रेणी के उपन्यास है।

इंदिरा गोस्वामी के 'भाइटि' नाम के एक भाई के जीवन पर आधारित 'उदयभानुर चरित्र' उपन्यास को व्यक्ति केन्द्रिक उपन्यास कह सकते है।

(ज) नारी भावना परक उपन्यास: इंदिरा गोस्वामी के हर एक उपन्यास में नारी जीवन को प्रमुखता मिली है। फिर भी 'नीलकंठी ब्रज', 'दक्षिणी कामरूप की गाथा', 'अहिरन', 'भिक्षार पात्र भांगि' और 'देवपीठर तेज' इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है।

पृष्ठभूमि:

उपन्यास के लिए पृष्ठभूमि अति आवश्यक उपादान होते हैं। उपन्यास के पृष्ठभूमि से मतलब है घटना और चरित्र के पीछे की स्थान, काल, समाज–जीवन और प्राकृतिक परिवेश। जिसके केंद्र में सारी कहानी चलती है। पृष्ठभूमि इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों की एक महत्वपूर्ण अंश है। इनके उपन्यासों में तीन प्रकार की पृष्ठभूमि देखने को मिलती है–

(क) असम के स्थानीय या आंचलिक पृष्ठभूमि,

(ख) असम तथा दूसरे राज्य सहित राष्ट्रीय पृष्ठभूमि,

(ग) अंतरराष्ट्रीय पृष्ठभूमि

उपरोक्त पृष्ठभूमियों के प्रकारों को नीचे विस्तार से समझते हैं–

(क) एक असमिया साहित्यकार होने के नाते सहज ही उनके उपन्यासों में असम के स्थानीय पृष्ठभूमि को स्थान मिला है। दक्षिण कामरूप के अमरंगा सत्र के पृष्ठभूमि पर 'दक्षिणी कामरूप की गाथा', गुवाहाटी शहर के पृष्ठभूमि पर 'उदयभानुर चरित्र', कामरूप के धलेश्वर नदी के तट पर स्थित गांव के पृष्ठभूमि पर 'भिक्षार पात्र भांगि', कामाख्या मंदिर के पृष्ठभूमि पर 'देवपीठर तेज' और 'छिन्नमस्ता' और कामरूप के निकटवर्ती बिजनी अंचल के पृष्ठभूमि पर 'थेंफ़ख्री तहचिलदारर तामर तरोवाल' आदि उपन्यासों की कहानी रची गयी है।

(ख) इंदिरा गोस्वामी ने असम से बाहर की राष्ट्रीय पृष्ठभूमि पर भी उपन्यास रची है। अपनी यथार्थ अनुभवों पर आधारित वे सभी उपन्यास बहुत ही उच्च स्तर की है। काश्मीर के 'चिनाब नदी' पर बन रहे पुल निर्माण कार्यों के पृष्ठभूमि पर 'चेनाबर स्रोत', उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिला पर स्थित सई नदी के पृष्ठभूमि पर 'जंग लगी तलवार', छत्तीसगढ़ में बहने वाली 'अहिरन नदी' पर निर्माणाधीन बांध के पृष्ठभूमि पर 'अहिरन', वृंदावन की पृष्ठभूमि पर 'नीलकंठी ब्रज' और दिल्ली शहर के पृष्ठभूमि में 'तेज आरु धूलिरे धूसरित पृष्ठा' यानी 'अ–इतिहास' उपन्यास का सृजन हुआ है।

(ग) भारतवर्ष से बाहर की पृष्ठभूमि पर भी इंदिरा गोस्वामी ने कई सारे उपन्यासों की रचना की है। इस श्रेणी के सभी उपन्यास उनके भ्रमण केन्द्रिक अनुभवों के आधार पर है। दक्षिण–पूर्व एशिया और जापान यात्रा में मिलने वाले जगहों को केंद्र करके 'बुद्धसागर धूसर गाइसा आरु मोहम्मद मूसा' और 'मरिसास' उपन्यास रचे गये हैं। साथ ही नेपाल में आयोजित रामायणी सम्मेलन की पृष्ठभूमि पर 'दशरथीर खोज' उपन्यास रची है।

इसके साथ ही राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पृष्ठभूमि पर रचे गए हैं 'जखमी यात्री' उपन्यास। उपन्यास की कहानी दिल्ली शहर में शुरू होकर पेरिस, जिनेवा,रोम आदि यूरोप भ्रमण के विस्तृत कथाओं को केन्द्र में रखकर आगे बढ़ती है।

निष्कर्ष

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि इंदिरा गोस्वामी ने अपनी रचनाओं में लोगों के अनकहे कष्टों और दुरूखों को वाणी दी है। विशेषकर उनके उपन्यासों ने निम्न वर्गीय समाज में चल रहे शोषण, आत्याचार, पीड़ित वर्ग के अनेक कष्टों को तथा स्त्रियों के ऊपर हो रहे शोषण आदि विषयों को समाज के सामने रखा है। ताकि हम फिर से एक बार उन विषयों को सहृदयता पूर्वक ध्यान दें, समझे और जिस हद तक हो सके उन समस्याओं को सुधारने के लिए हम अपनी ओर से कोशिश करें। सारी जिंदगी उन्होंने मानवता के गीत गाये अपने लेखनियों द्वारा। दूसरों के हित के लिए हमेशा आवाज उठायी। उसके लिए उन्हें कितनी ही बड़ी धमकियों का सामना करना पड़ा लेकिन उन्होंने उसकी परवाह न करते हुए हमेशा समाज के हित के लिए आगे बढ़ते रहे, कार्य करते हैं। साहित्य ही वह चीज है जो समाज को अच्छी तरह से समझती है। साहित्य को समाज दर्पण कहा जाता है। साहित्य को समाज का दर्पण इसलिए कहा गया है क्योंकि साहित्य ने इंदिरा गोस्वामी जैसे लेखिका का जन्म दिया है जो अपने हिसाब से समाज को देखती है, समाज में चल रहे अन्याय अनाचार नीति के खिलाफ आवाज उठाती है।

संदर्भ–ग्रंथ सूची:

1.छिन्नमस्ता–इंदिरा गोस्वामी,रूपांतरण–पापोरी गोस्वामी,भारतीय ज्ञानपीठ,नई दिल्ली 2005
2.दक्षिणी कामरूप की गाथा, इंदिरा गोस्वामी, हिन्दी अनुवाद– श्रवण कुमार,साहित्य अकादमी, नई दिल्ली,1997
3.अहिरन, इंदिरा गोस्वामी, हिन्दी अनुवाद–बुद्धदेव चटर्जी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली,2008
4. जंग लगी तलवार, इंदिरा गोस्वामी, हिन्दी अनुवाद–पापोरी गोस्वामी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2006
5.नीलकंठी ब्रज, इंदिरा गोस्वामी, अनुवाद– दिनेश द्विवेदी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली 2010
6.उपन्यास स्वरूप और संवेदना,राजेन्द्र यादव,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,1993
7.समकालीन हिंदी कथा लेखिकाएँ,डॉ.रामकली सर्राफ,अनुराग प्रकाशन,वाराणासी,1988
8.स्त्रीत्वादी विमर्शरू समाज और साहित्य, क्षमा शर्मा,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2008
9. समकालीन हिंदी उपन्यास समय से साक्षात्कार,डॉ विजयलक्ष्मी,राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,2006

10.हिंदी उपन्यास 1950 के बाद संपादक,निर्मला जैन और नित्यानंद तिवारी,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज नई दिल्ली,1983
11.उपन्यास का पुनर्जन्म,परमानंद श्रीवास्तव,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,1995
12.नैतिक मूल्य: समकालीन परिवेश में कन्हैयालाल गांधी,फ्रेंक ब्रदर्स एंड कंपनी,नई दिल्ली,2000
13. भारतीय उपन्यास साहित्य का उद्‌भव तुलनात्मक समाजशास्त्रीय विश्लेषण,डॉ आर.एस. सरार्जु,मिंलद प्रकाशन,हैदराबाद,2005
14. परंपरा और आधुनिकीरण(हिंदी उपन्यासों का परिप्रेक्ष्य),कमलेश अवस्थी,स्वाराज,नई दिल्ली,2006

असमीया ग्रंथ

1.नारीवाद आरु असमीया उपन्यास,डॉ.गोविन्द प्रसाद शर्मा, असम प्रकाशन गुवाहाटी, 2016
2. साहित्य वैभव, सम्पादक–डॉ. उमेश डेका और निर्माली दास, चन्द्र प्रकाश, पानबाजार गुवाहाटी, 2013
3. नारी ऐतिज्य आरु बिवर्तन, सम्पादक–डॉ.मामनि बरा,पूर्वाचल प्रकाश गुवाहाटी, 2015
4.मामनि रयसम उपन्यास,विचार–विश्लेषण,डॉ भनिता नाथ,प्रथम संस्करण,सितम्बर 2020
5.साहित्य संस्कृति इतिहास–श्री प्रफुल्ल दत्त गोस्वामी, श्री खगेन्द्र नारायण दत्त बरुवा,लायर्स बुक स्टाल, पान बाजार,गुवाहाटी,1992
6.पाश्चात्य साहित्यर आलोक आरु असमीया साहित्य–डॉ.पराग कुमार भट्टाचार्य,प्रकाशिका श्रीमती ईला शर्मा, ज्योति प्रकाशन,गुवाहाटी–1
7.असमीया साहित्य नारी, सम्पादक–बिनिता दत्त,प्रकाशक–सदो असम लेखिका समारोह समिति,तेजपुर,1995
8. असमीया साहित्यर पाश्चात प्रभाव,डॉ. नारायण दास,डॉ.परमानन्द राजवंशी,प्रकाशक–गोट,स्नातकोत्तर असमिया अध्ययन केन्द्र,असमिया विभाग,1994
9. असमीया साहित्य लोइ महिला लेखकर दान,डॉ. हेम बरा,सताब्दी प्रकाशन,गोलाघाट,असम।
10. साहित्य विचार मूल कथारूडॉ. हेमबरा,चन्द्र प्रकाश, पानबाजार,1995
11.साहित्य सांस्कृति प्रवाह, यज्ञेश्वर शर्मा,चुरेन चन्द्र वैश्य प्रकाशन,जर्नाल एम्परियम,नालबारी,असम
12.स्वराजोत्तर असमीया समीक्षारूप्रफुल्ल कटकी,वीणा लाईब्रेरी,गुवाहाटी,1979
13.उपन्यासर आधुनिक समालोचनारूपध्यति आरु प्रकल्प,हिरेन गोहाई,एल.बी पब्लिकेशन,1985
14.एश बसरर असमीया उपन्यास,नगेन ठाकुर,ज्योति प्रकाशन,2008
15.उपन्यास,प्रहलाद कुमार बरुवा,बनलता प्रकाशन,1983
16.साहित्य विथिका,ज्ञानानंन्द शर्मा,पाठ सविनय प्रकाशन,गुवाहाटी,1999
17. आधुनिक उपन्यास,पराग ठाकुर भट्टाचार्य,असम प्राइवेट कंपनी,1999

पत्र–पत्रिकाएँ

1.गरियसी, मासिक पत्रिका,फेब्रवारी 2012